युवा अपने देश के शक्ति बोध एवं सौंदर्य बोध से अवगत हों–

प्रो. अच्युत सामंत

कीट–कीस, कीम्स व कीट इंटरनेशनल स्कूल के लगभग 60 हजार बच्चों तथा 10 हजार स्टाफ की उपस्थिति में अपने क्रिकेट स्टेडियम पर बड़े पैमाने पर यादगार तरीके से आजाद भारत का 68वाँ गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। 26 जनवरी को प्रातः 8.00 बजे से ही कीट शैक्षणिक समूह के हजारों युवा एवं बाल कलाकार अपनी–अपनी प्रस्तुति के लिए आतुर नजर आये, वहीं मार्चपास्ट हेतु लगभग 50 अलग–अलग संकायों/विभागों आदि की टुकड़ियाँ ध्वजारोहण से पूर्व स्टेडियम में अपनी–अपनी जगह पर मुस्तैद नजर आईं।

कीट–कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने परेड की सलामी ली, जबकि मंचासीन अनेक विदेशी मेहमानों ने उस अद्भुत नजारे का भरपूर आनंद उठाया। इस अवसर पर बच्चों एवं युवाओं द्वारा अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, वहीं कीट के युवा वैज्ञानिकों की ओर से अनेक वैज्ञानिक असाधारण उपलब्धियों की भी झाँकी प्रस्तुत की गई। अपने संबोधन में डॉ. अच्युत सामंत ने यह बताया कि छात्र जीवन में कठोर परिश्रम, त्याग और सतत साधना–व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। आज देश के युवाओं को भारत के शक्तिबोध को समझने और उसकी रक्षा करने की जरूरत है। युवाओं को चाहिए कि वे अपने देश के देशभक्तों, अमर शहीदों, महापुरुषों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, समाजसेवियों और भारतीयता के शाश्वत मूल्यों को जानें और समझें। उनको अपने जीवन में अपनायें।

देश की आजादी के बाद भारत को विकासशील से विकसित बनाने की पूरी जिम्मेदारी अब देश के युवाओं के हाथों में है। आज भारत की गौरवशाली परम्परा को बचाये रखने की आवश्यकता है। भारत के शक्तिबोध और सौंदर्यबोध से पूरी तरह से अवगत होने की है। वे जहाँ पर रहते हैं, वे जहाँ पर अध्ययनरत हैं, वहाँ पर जो भी सुविधाएँ उन्हें उपलब्ध हैं उनकी वे पूरी तरह से सुरक्षा करें। ऐसे में सार्वजनिक स्थलों, अपने स्कूल–कॉलेजों एवं यातायात के सभी साधनों आदि की वे सुरक्षा की आज गारंटी लें, संकल्प लें, तभी जाकर भारत विकासशील से विकसित देश बन सकता है। उन्होंने आज के पावन अवसर पर युवाओं को उनके मौलिक अधिकारों का कम एवं उनके मौलिक कर्त्तव्यों को पूरी तरह से पालन करने का भी निवेदन किया। डॉ. सामन्त ने अपने विदेह एवं त्यागमय जीवन का उल्लेख करते हुए युवाओं को आज के दिन यह संदेश दिया कि युवा स्वयं शिक्षित बनें, स्वावलंबी बनें और दूसरों को भी शिक्षित एवं स्वावलंबी बनायें। उन्होंने अपने कर्मयोगी जीवन को अनुकरणीय बताते हुए आदिवासी एवं समाज के कमजोर वर्ग के बच्चों को पूरी तरह से शिक्षित बनाकर उन्हें समाज के विकास की मुख्यधारा के साथ जोड़ने का भी निवेदन किया। उन्होंने बताया कि वे हर प्रकार के कष्टों को झेलकर आज कीस के कुल 32 हजार आदिवासी बच्चों के

सर्वांगीण विकास के काम में लगे हुए हैं और चाहेंगे कि कीट–कीस का प्रत्येक बच्चा अच्युत सामंत बने निःस्वार्थ समाजसेवा के क्षेत्रा में।

इस अवसर पर उन्होंने कीट–कीस परिवार के व्यवहारकुशल, विश्वासी और जिम्मेदार चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी श्री कालु राम को 'बेस्ट स्टाफ ऑफ दी ईयर' से सम्मानित किया।

जय जगन्नाथ!